संगतराश होफुस

एक जापानी लोककथा

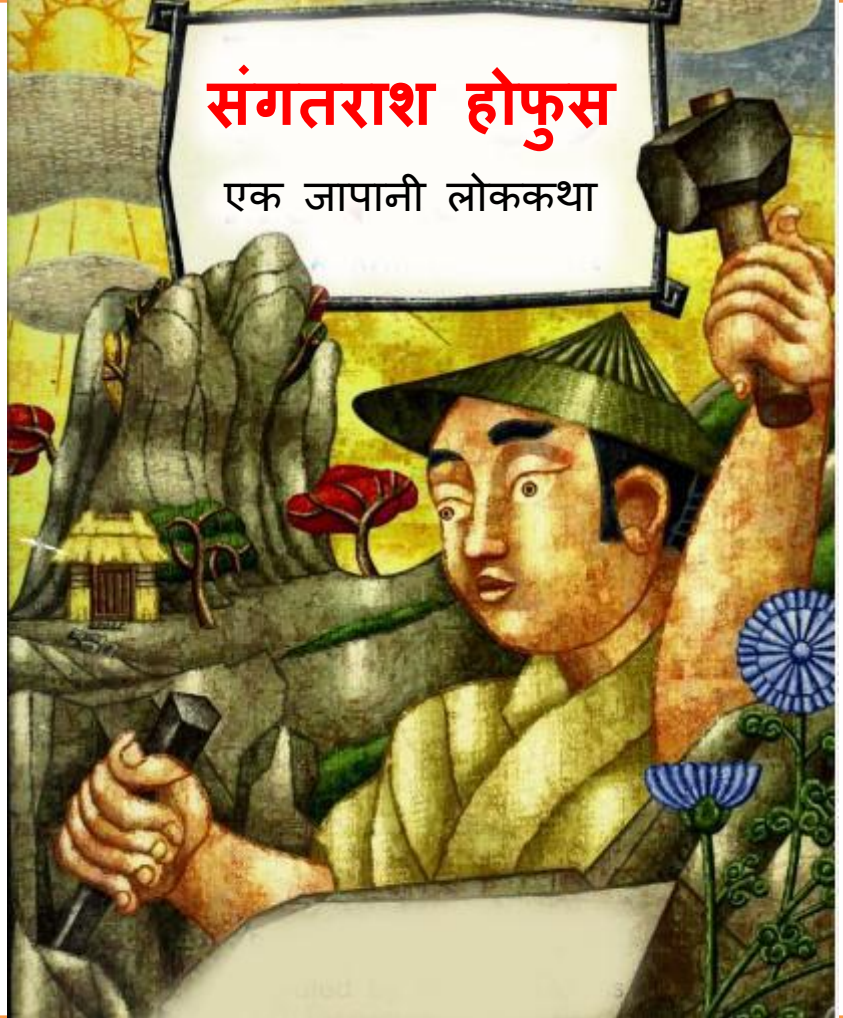

संगतराश होफुस

एक जापानी लोककथा

एक समय की बात है. जापान में होफुस नाम का एक लड़का रहता था. वह एक संगतराश था – वो पत्थर काटता था. एक ऊंचे पर्वत की एक कगार पर उसकी छोटी सी झोपड़ी थी.

हर दिन वह पहाड़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें काटता और पत्थर के टुकड़े तराश कर बाज़ार में बेचता. पत्थर तोड़ते समय अकसर वह एक गीत गुनगुनाता:

पत्थर तोड़ूं मैं दिन-भर
यही करूंगा मैं जीवन-भर.

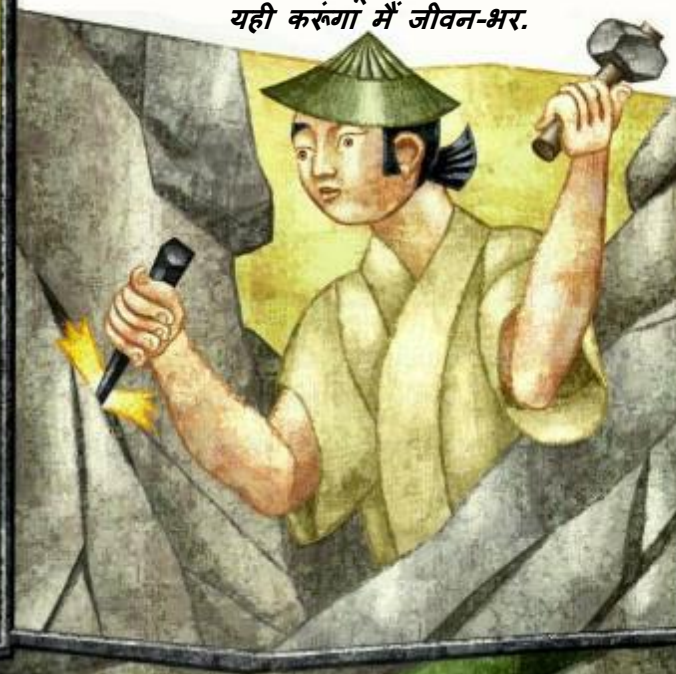

दिन का काम पूरा कर, वह अपनी झोपड़ी के बाहर बैठ जाता. वह डूबते सूर्य को देखता, उस समय वह यह गीत गाता:

ऊंची है यह पर्वतमाला ऊपर गगन बहुत विशाल,
होफुस क्यों है इतना छोटा, मन में आता यही ख्याल.

एक दिन अपने ठेले पर बहुत सारे पत्थर रख कर वह पहाड़ से नीचे आया और नगर की ओर चल दिया. नगर में एक राजकुमार का सुंदर और विशाल महल था.

"मैं होफुस हूँ, एक संगतराश," उसने महल के सिपाही से कहा, "महल के माली ने यह पत्थर मंगवाये हैं."

"इन्हें अंदर बाग़ में ले जाओ," सिपाही ने कहा.

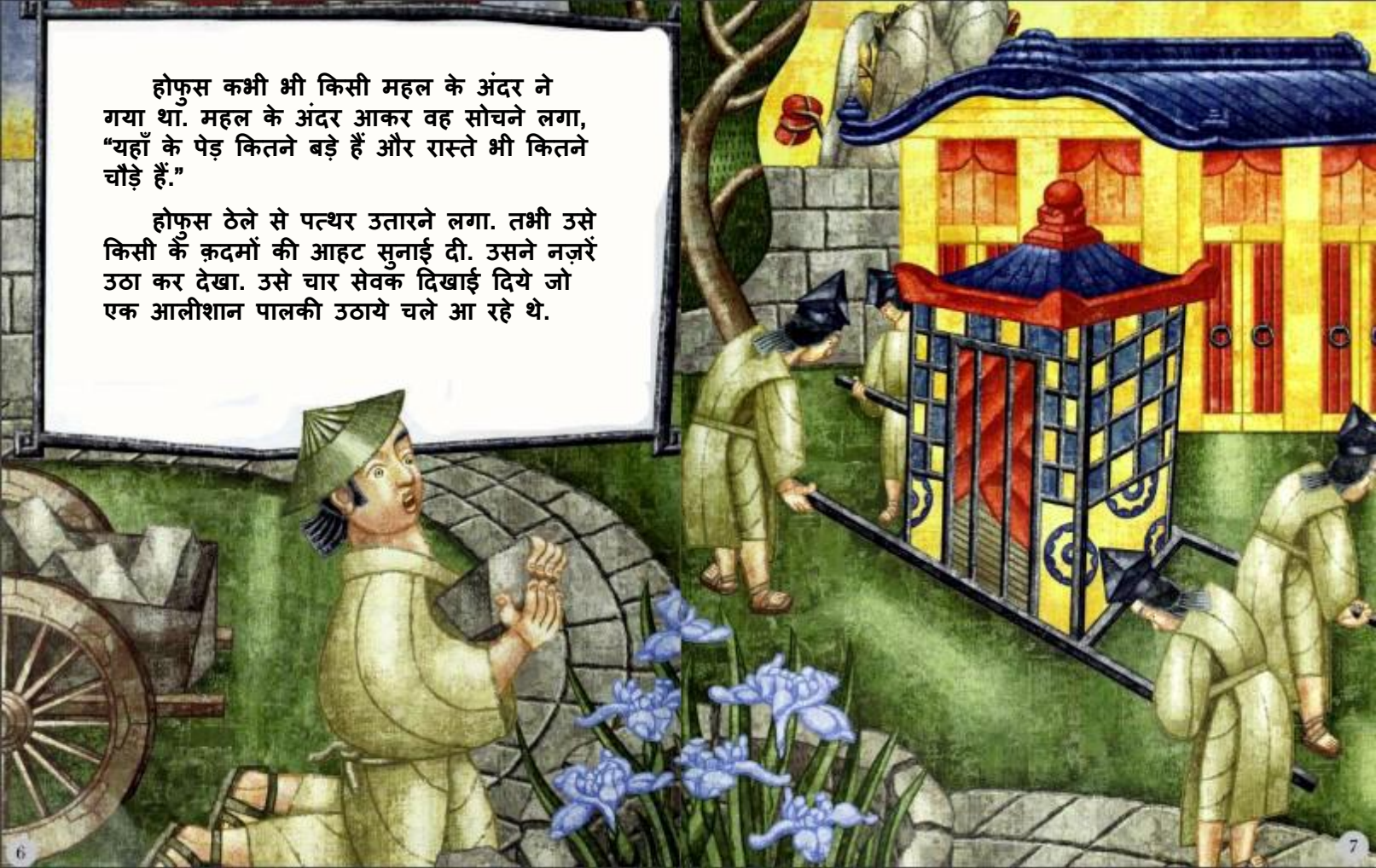

होफुस कभी भी किसी महल के अंदर ने गया था. महल के अंदर आकर वह सोचने लगा, “यहाँ के पेड़ कितने बड़े हैं और रास्ते भी कितने चौड़े हैं.”

होफुस ठेले से पत्थर उतारने लगा. तभी उसे किसी के क़दमों की आहट सुनाई दी. उसने नज़रें उठा कर देखा. उसे चार सेवक दिखाई दिये जो एक आलीशान पालकी उठाये चले आ रहे थे.

महल के दरवाज़े के पास पहुँच कर सेवक रुक गए. दो और सेवक वहां दौड़े आये. सेवकों ने पालकी के सामने ज़मीन पर एक गलीचा बिछा दिया. फिर उन्होंने पालकी का पर्दा हटाया. सुंदर, महंगे रेशमी वस्त्र पहने एक युवक पालकी से बाहर आया. वह राजकुमार था.

"मेरे लिए आड़ू का शर्बत ले कर आओ," राजकुमार ने एक सेवक से कहा. "मेरे लिए एक केक ले कर आओ," उसने दूसरे से कहा. "नहाने के लिए गर्म पानी का प्रबंध करो," उसने तीसरे से कहा.

होफुस आश्चर्यचकित-सा सब देख रहा था. सब को आदेश देकर राजकुमार सेवकों सहित महल के अंदर चला गया.

ठेले से सारे पत्थर उतार कर होफुस पहाड़ पर स्थित अपनी झोपड़ी वापस लौट आया. अपनी झोपड़ी के बाहर बैठ कर वह एक नया गीत गाने लगा:

मेरी है यही कामना बन जाऊं मैं शक्तिशाली राजकुमार
मेरी तो बस है यही कामना मेरी भी हो जयजयकार.

अचानक किसी ने ऊंची आवाज़ में कहा, "क्या तुम सचमुच एक राजकुमार बनना चाहते हो?"

होफुस उछल पड़ा. उसने सहमी सी आवाज़ में पूछा, "कौन बोल रहा है?"

"मैं पर्वत-देवता हूँ."

"कौन?"

"मैं हर इच्छा पूरी कर सकता हूँ. मैं तुम्हारी यह इच्छा पूरी करता हूँ," पर्वत-देवता ने कहा.

पलक झपकते ही होफुस ने पाया कि वह गर्म पानी के टब में लेटा था. एक सेवक सोने की साबुनदानी हाथ में लिए खड़ा था. दूसरे सेवक के हाथ में चाँदी का ब्रुश था.

"राजकुमार होफुस," तीसरे सेवक ने कहा, "रात्रि का शाही भोजन तैयार है. अगर आपने स्नान कर लिया है तो क्या शाही तौलिया प्रस्तुत करूं?"

"ओह.....हाँ," होफुस ने कहा.

सेवक ने शाही तौलिये से होफुस का बदन पोंछ कर सुखाया और उसे सुंदर रेशमी किमोनो पहनाया. होफुस मन-ही-मन सोचने लगा, "अब मैं भी एक शक्तिशाली राजकुमार हूँ."

भोजन करने के पश्चात वह बोला, "मुझे अब नींद आ रही है."

दो सेवकों ने झटपट शाही बिस्तर के इर्दगिर्द टंगे परदे हटा दिये. होफुस धीमे से बुदबुदाया, "एक शक्तिशाली राजकुमार बन कर कितना अच्छा लगता है."

जब वह नींद से जागा, आकाश में सूरज चमक रहा था. उसने सुबह का नाश्ता किया और शाही बाग़ में टहलने लगा. हर पल धूप तेज़ हो रही थी. उसने आदेश दिया, "छाता ले कर आओ."

दो सेवक दौड़ कर एक बड़ा-सा छाता ले आये. सेवकों ने छाता खोल कर होफुस के ऊपर तान दिया. गर्मी बढ़ती ही जा रही थी.

"पंखा ले कर आओ," होफुस ने आदेश दिया.

दो सेवक भाग कर बड़े-बड़े पंखे ले कर आये और उसे पंखा झलने लगे.

होफुस बाग़ में टहलता रहा, दो सेवक छाता ले कर उसके पीछे-पीछे चलते रहे, दो अन्य सेवक पंखों से हवा करते रहे.

सूरज की गर्मी बढ़ती ही गई. होफुस एक बेंच पर बैठ गया. वह एक नया गीत गुनगुनाने लगा:

बड़ा मज़ा है बनने में इक शक्तिशाली राजकुमार,
पर सूरज की शक्ति के आगे मेरी शक्ति है बेकार.
कितना अच्छा होता गर मैं भी सूरज बन पाता,
मन में मेरे तो अब यही विचार है आता-जाता.

होफुस ने पर्वत-देवता की ऊंची आवाज़ सुनी, "तुम्हारी इच्छा पूरी हो."

होफुस उसी पल सूरज बन गया. उसने आकाश से नीचे देखा. धरती पर सब लोगों ने छाते ले रखे थे, पंखों से अपने-आप को हवा कर रहे थे, गर्मी से बचने के लिए छायादार जगह खोज रहे थे.

तभी अचानक होफुस को नीचे दिखाई देना बंद हो गया.

"एक बादल ने बीच में आकर धरती को ढक दिया है. ओ बादल, दूर हटो, मुझे नीचे का दृश्य देखने दो," उसने चिल्ला कर बादल से कहा.

परन्तु बादल अपनी जगह से तनिक भी न हिला. चिल्लाने के अतिरिक्त होफुस कुछ भी न कर पाया. कुछ पलों के बाद वह एक गीत गाने लगा:

बादल तो होता है सूरज से भी अधिक बलवान,
मुझे बना दो इक बादल, मांग रहा मैं यह वरदान.

इतना गाते ही होफुस बादल बन गया. पर्वत-देवता ने उसकी इच्छा पूरी कर दी थी.

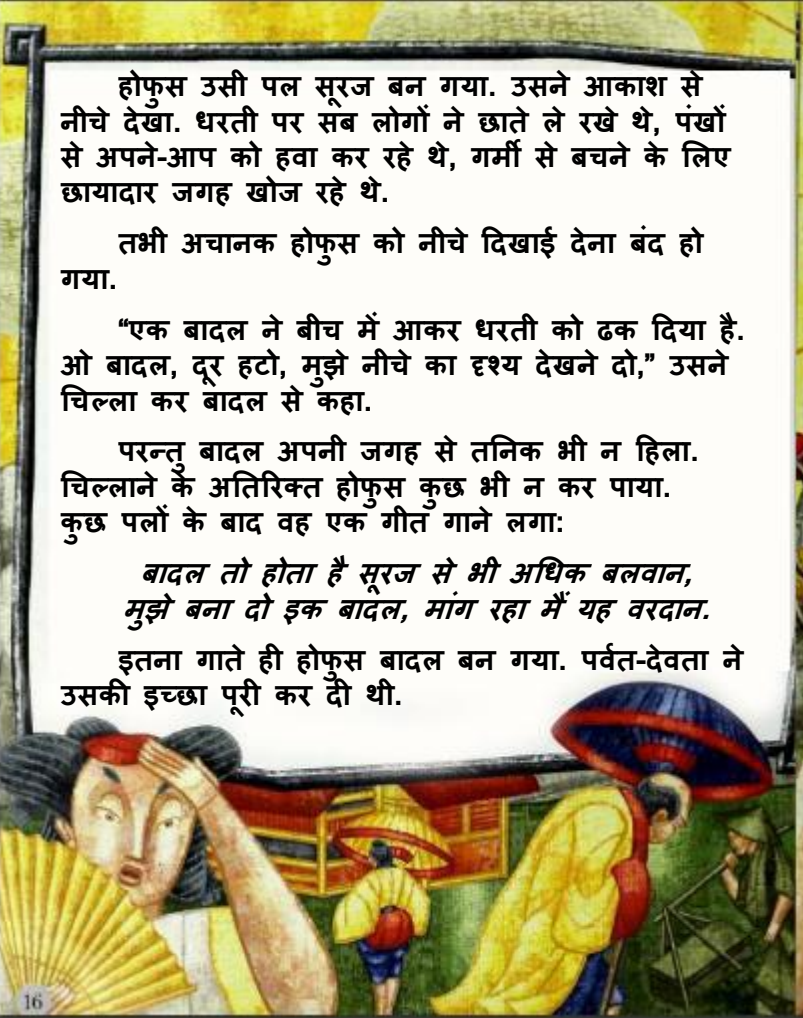

बादल के रूप में होफुस ने नीचे देखा. धरती पर लोग ख़ुशी-ख़ुशी अपने छाते बंद कर रहे थे, अपने पंखे समेट रहे थे.

“अब मेरे से शक्तिशाली कोई भी नहीं है,” होफुस ने सोचा.

आकाश में धीरे-धीरे चलते हुए होफुस ने सूरज को पूरी तरह ढक दिया था. शाम हुई, सूर्य अस्त होने लगा. होफुस भी आकाश में इधर-उधर उड़ता रहा.

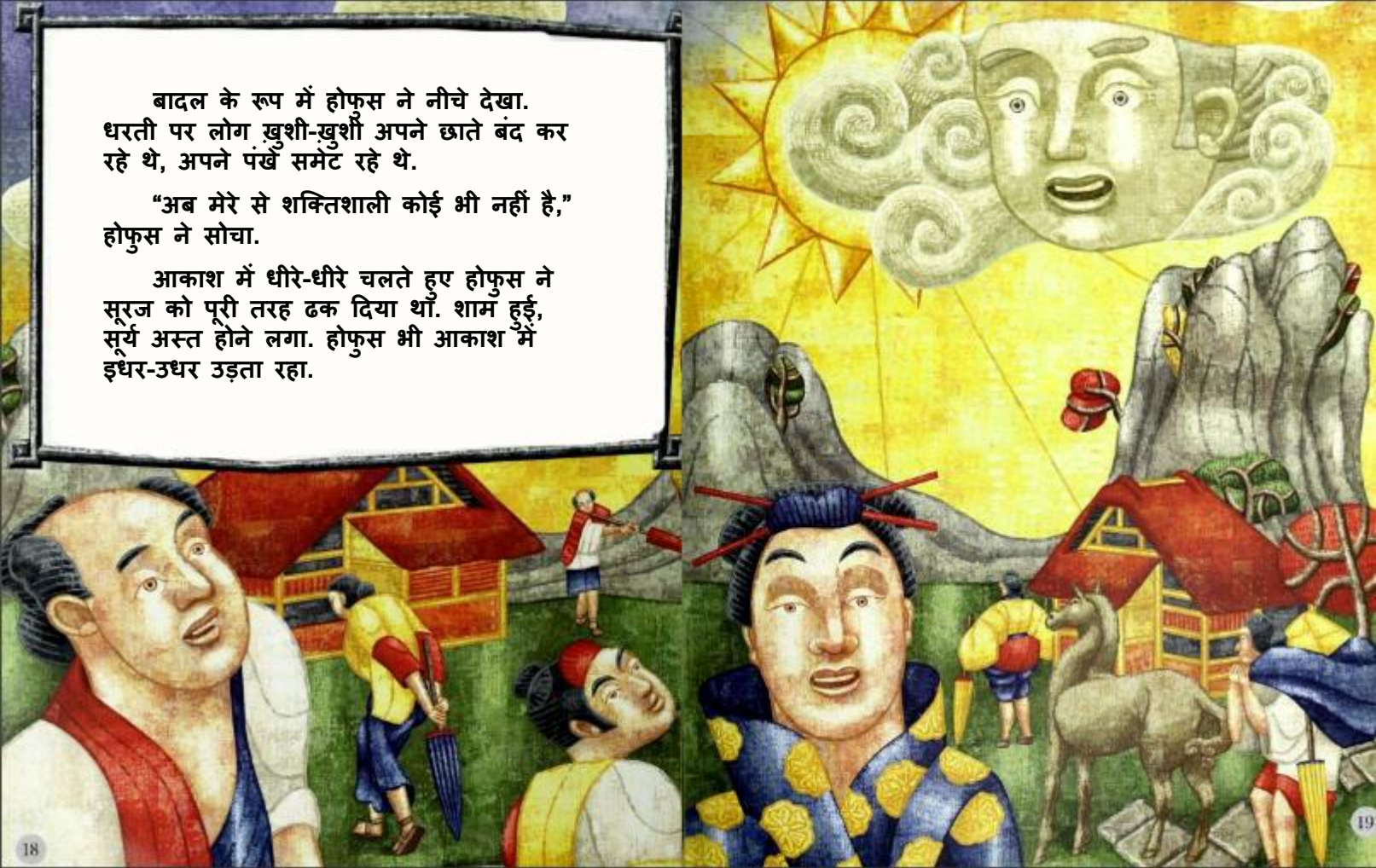

अचानक किसी ने होफुस को पकड़ लिया. अब वह कहीं जा न पा रहा था; न ऊपर न नीचे, न आगे न पीछे.

“छोड़ो.....मुझे जाने दो,” उसने चिल्ला कर कहा.

पर्वत ने उसकी बात अनसुनी कर दी, पर्वत ने ही उसे पकड़ रखा था. होफुस ने बहुत कोशिश की पर वह अपने-आप को छुड़ा न पाया. हार कर वह एक गीत गाने लगा:

ओ पर्वत के देवता मुझ को कर दो आज निहाल
इच्छा मेरी पूरी कर दो मैं बन जाऊं पर्वत विशाल.

पर्वत-देवता ने इस बार थकी हुई आवाज़ में कहा, “ठीक है, पर्वत बन जाओ.”

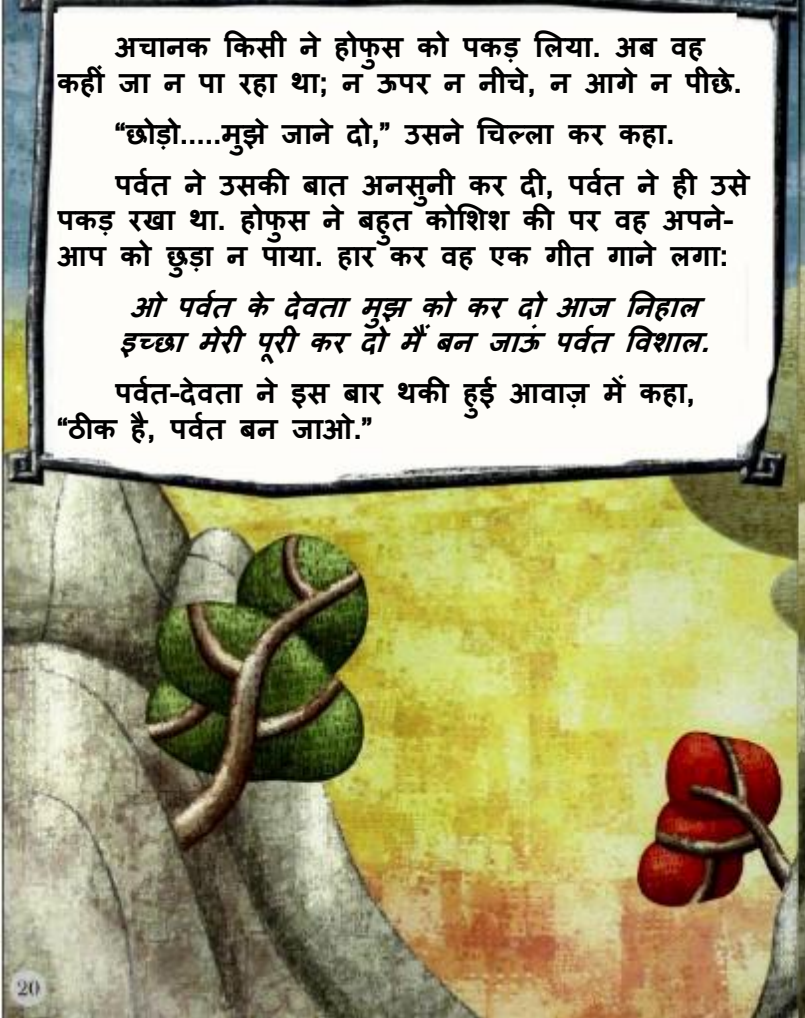

होफुस अब एक विशाल पर्वत बन गया. उसने नीचे झुक कर देखा. उसने देखा कि पर्वत की कई चोटियाँ थीं, पर्वत पर कई नदियाँ थीं, कई झरने और जलप्रपात थे. तभी उसने एक आवाज़ सुनी:

"ठक...ठक...ठक...ठक..."

"यह शोर कौन कर रहा है?" वह सोचने लगा. उसने नीचे ढलान की और देखा. उसे एक संगतराश दिखाई दिया जो लगातार हथौड़ा मार कर पत्थर काट रहा था.

"रुक जाओ, पत्थर मत तोड़ो," उसने चिल्ला कर कहा.

परन्तु संगतराश ने उसकी बात सुनी ही नहीं. वह चट्टान काटता रहा, "ठक...ठक...ठक...ठक..."

धड़ाम की आवाज़ के साथ एक बड़ी चट्टान कट कर अलग हो गयी. संगतराश दूसरी चट्टान काटने लगा.

"यह संगतराश तो पर्वत से भी अधिक ताकतवर है."

तभी होफुस ने पर्वत-देवता की गम्भीर आवाज़ सुनी, "क्या तुम्हारी कोई और इच्छा है? कुछ माँगना चाहते हो?"

"हाँ, मेरा मन चाहता है कि मैं एक ताकतवर संगतराश होता."

"तुम तो संगतराश ही हो," पर्वत-देवता ने कहा.

होफुस ने आँख झपकाई. वह तो अपनी छोटी झोपड़ी के बाहर ही बैठा था. वह कुछ देर चुपचाप बैठा रहा फिर वह एक गीत गाने लगा:

ऊंची है यह पर्वतमाला ऊपर गगन है बहुत विशाल,
होफुस की बात क्या कहना, उसने सीखा सबक कमाल.

अंत